



"What needs to be ensured is that the private sector should not be crowded out for raising resources from the market"

SANDEEP JAJODIA, president, Assocham

Banks may review deposit, lending rates in near future

ENSECONOMIC BUREAU
MUMBAI, AUGUST 1

BANKS ARE gearing up to increase deposit and lending rates in the wake of 25 basis points hike in Repo rate by the Reserve Bank of India on Wednesday.

According to SBI Chairman Rajnish Kumar, the RBI decision to raise repo rate by 25 bps for the second time in succession is a clear desire to frontload the rate hike cycle. "Simultaneously, the decision to keep the stance in neutral mode indicates RBI willingness to be flexible and accommodative with global growth continuing to be uncertain," Kumar said. SBI had revised interest rates on its retail and bulk term deposits with effect from Monday.

Bank of Maharashtra's Executive Director A C Rout said, "many banks have already started increasing their lending as well as deposits rates and Bank of Maharashtra may review its rates in near future."

"The increase in repo rate by 25 basis points went as per the expectations of the analysts. The RBI's announcement is based on the consecutive rise in inflation witnessed in past few months, on apprehensions of the trade wars, global uncertainties and the impact of the hike in MSPs that may have cascading impact on rural inflation in the near term," Rout said.

Rana Kapoor, MD & CEO, YES Bank, said, "the RBI rate hike is a

"The decision to keep the stance in neutral mode indicates RBI willingness to be flexible and accommodative with global growth continuing to be uncertain"

RAJNISH KUMAR
SBI CHAIRMAN

rational response to the recent acceleration in inflation momentum. However, with peak of CPI inflation now behind us, and monetary transmission playing out gradually hereon, I expect a pause in the remainder of FY19. I foresee the RBI re-focusing on the growth-inflation mix, as the cumulative impact of 50 bps of rate hike is assessed, amidst an uncertain global environment."

Chandra Shekhar Ghosh, MD & CEO, Bandhan Bank, said, "considering the uncertainties on the external front and the pressure on inflation, the RBI has taken the right decision. The impact of the rate hike will be seen with a lag effect, giving the RBI time to decide on the next course of action."

Meanwhile, India Inc said the rate hike by the RBI reflects an uptick in credit demand even as it urged RBI not to take growth for granted. "What needs to be ensured is that the private sector should not be crowded out for raising resources from the market," Assocham President Sandeep Jajodia said.

आरबीआई ने महंगाई बढ़ने की चिंता में लगातार दूसरी बार ब्याज दर में 0.25 फीसदी की बढ़ोतरी की

आरबीआई के झटके से ईएमआई बढ़ेगी

मौद्रिक समीक्षा

मुंबई | एजेसी

रिजर्व बैंक ने खाद्य पदार्थों की बढ़ती महंगाई को देखते हुए बुधवार को नीतिगत ब्याज दर में 0.25 फीसदी बढ़ोतरी का फैसला किया है। इससे आपके कार और होम लोन की ईएमआई बढ़ेगी।

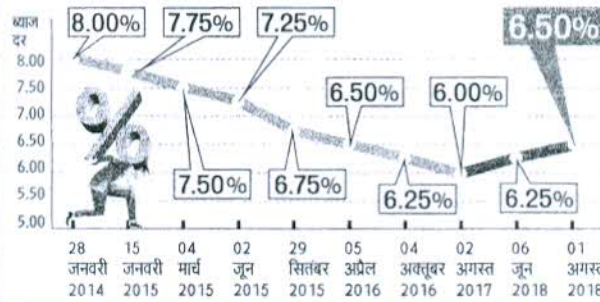
केंद्रीय बैंक ने लगातार दूसरी बार मौद्रिक नीति समीक्षा के दौरान रेपो दर में बढ़ोतरी की है और अब यह 6.50% हो गई है। इससे आम आदमी से लेकर उद्योगों तक के लिए बैंकों से कर्ज लेना महंगा होना तय है। रेपो रेट वह दर होती है जिस पर रिजर्व बैंक दूसरे बैंकों को उधार देता है। ऐसे में जब बैंकों को ज्यादा ब्याज दर चुकानी पड़ती है तो वे इसका कुछ भार उपभोक्ताओं पर भी डालते हैं। आरबीआई ने रिजर्व रेपो दर को भी 0.25 फीसदी बढ़ाकर 6.25 फीसदी कर दिया है।

त्योहारी सीजन के दौरान उपभोग से बढ़ेगी मुद्रास्फीति: रिजर्व बैंक के गवर्नर उर्जित पटेल की अगुआई में छह सदस्यीय समिति के इस कड़े फैसले की वजह आगामी त्योहारी सीजन के दौरान महंगाई बढ़ने की चिंता रही। समिति ने अनुमान लगाया कि दूसरी छमाही के



ब्याज दरों में बढ़ोतरी का रुख

आरबीआई ने छह जून की मौद्रिक समीक्षा में रेपो दर को 6 से 6.25 फीसदी किया था। जनवरी 2014 के बाद जून में पहला मौका था जब ब्याज दर में बढ़ोतरी हुई थी। 2014 के बाद आरबीआई ने छह बार ब्याज दरों में कमी की। आखिरी बार यह कमी दो अगस्त 2017 में हुई। लेकिन जून से फिर बढ़ोतरी का रुख है।



दौरान मुद्रास्फीति 4.8 प्रतिशत तक पहुंच सकती है। जबकि आरबीआई इसे चार फीसदी तक सीमित रखना चाहता है। रिजर्व बैंक के गवर्नर उर्जित पटेल ने यह संकेत दिया कि महंगाई में नरमी आती है तो ब्याज दर में कमी भी जा सकती है। हालांकि कुछ विशेषज्ञ अक्टूबर में फिर ब्याज दर बढ़ोतरी की संभावना जता रहे हैं।

इसका ध्यान रखा जाना चाहिए कि निजी क्षेत्र को संसाधन जुटाने में परेशानी नहीं हो। उद्योग जगत का बड़ा हिस्सा अभी भी भारी कर्ज बोझ तले दबा है ऐसे में आर्थिक वृद्धि को तय मानकर नहीं चलना चाहिए।

- संदीप जजोडिया, एसोचैम के अध्यक्ष

राहत भी मिलेगी : बचत पर जमा दर बढ़ेगी

1 एफडी पर ज्यादा रिटर्न रेपो में वृद्धि के बाद एफडी पर ब्याज दर बढ़ सकती है। एसबीआई ने इसकी घोषणा पहले ही कर दी। बैंक एफडी पर मिलने वाले ब्याज में 0.05 से 0.10% की वृद्धि कर सकते हैं।

2 बचत स्कीमों पर लाभ काफी समय में छोटी बचत योजनाओं पर ब्याज दरें कम हो रही थी। इससे छोटे निवेशकों को नुकसान हो रहा था। अब केंद्र पीपीएफ, सुकन्या समृद्धि जैसी योजनाओं पर दर बढ़ा सकती है।

3 म्यूचुअल फंड असर छोटी बचत योजनाओं पर ब्याज घटने से निवेशकों ने म्यूचुअल फंड और इविटी का रुख किया था। अगर छोटी बचत योजनाओं पर दरें बढ़ती हैं तो म्यूचुअल फंड और बाजार में निवेश घटेगा।

4.8 प्रतिशत रहने का अनुमान महंगाई का दूसरी छमाही में

2016 अप्रैल के बाद सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंची ब्याज दर

2013 अक्टूबर के बाद पहली बार लगातार दूसरी वृद्धि

मुद्रास्फीति के लिए चिंता बनीं ये वजहें

- कच्चा तेल पांच माह से 70 डॉलर के पार
- फसलों का एमएसपी और महंगाई भत्ता
- मानसून तेज होने से मांग-खर्च बढ़ेगा,
- वित्तीय घाटे और रुपये पर दबाव

फैसले से निराश हुआ बाजार

सेंसेक्स बुधवार को 37,711.87 तक पहुंच गया था। रिजर्व बैंक के फैसले से यह 85 अंक गिरकर 37,521.62 अंक पर बंद हुआ।

भारत में ब्याज दर दुनिया के अन्य देशों के मुकाबले अभी भी ज्यादा है, जिसकी वजह से घरेलू उद्योगों की प्रतिस्पर्धा पर असर पड़ता है। खासतौर से लघु एवं मध्यम उद्योगों की प्रतिस्पर्धा क्षमता प्रभावित होती है।

- राशेश शाह, फिक्की के अध्यक्ष

रियल एस्टेट की नजर से देखा जाए तो इस वृद्धि का खरीदारों पर नकारात्मक असर होगा और मकानों की बिक्री कम होगी। आवासीय परियोजनाओं में देरी की वजह से यह क्षेत्र पहले ही मंदी के दौर से गुजर रहा है।

- निरंजन हीरानंदानी, नेरेडको अध्यक्ष

कर्ज की मांग में तेजी को दर्शाती है रीपो दर में बढ़त

भाषा
नई दिल्ली, 1 अगस्त

उद्योग जगत ने रिजर्व बैंक की रीपो दर में वृद्धि को ऋण मांग में आई वृद्धि के साथ जोड़ते हुए कहा है कि केंद्रीय बैंक को आर्थिक वृद्धि के साथ संतुलन बिठाते हुए कदम उठाना चाहिए। रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति ने दो माह से भी कम समय में आज दूसरी बार रीपो दर में 25 आधार अंक का इजाफा किया है। आने वाले समय में मुद्रास्फीति बढ़ने की चिंता के बीच रिजर्व बैंक ने रीपो दर 25 आधार अंक बढ़ाकर 6.50 फीसदी पर पहुंचा दिया।

एसोचैम के अध्यक्ष संदीप जजोडिया ने कहा, इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि निजी क्षेत्र को संसाधन जुटाने में परेशानी नहीं हो। उन्होंने कहा कि कंपनियों और बैंकों की बैलेंस शीट की दोहरी समस्या अभी भी बरकरार है। उद्योग जगत का बड़ा हिस्सा अभी भी भारी

कर्ज बोझ तले दबा है, ऐसे में आर्थिक वृद्धि को तय मानकर नहीं चलना चाहिए। फिक्की के अध्यक्ष रशेश शाह ने रीपो दर में वृद्धि को उम्मीद के अनुरूप बताया, लेकिन कहा कि आज की वृद्धि के बाद यह उम्मीद की जाती है कि ब्याज दर परिवेश स्थिर बना रहेगा। वर्ष के शुरुआती महीनों में ब्याज दरें बढ़ाकर रिजर्व बैंक आगे बढ़ती मुद्रास्फीति के असर को कम करना चाहता है और इससे रुपये को भी समर्थन मिलेगा।

फिक्की अध्यक्ष ने सरकार और रिजर्व बैंक को यह सुझाव भी दिया है कि उन्हें मुद्रास्फीतिक दबाव को नियंत्रित करने के लिए काम करना चाहिए क्योंकि यह दबाव माँग के मुकाबले आपूर्ति कम रहने की वजह से बन रहा है।

शाह ने कहा कि भारत में वास्तविक ब्याज दर दुनिया के अन्य देशों के मुकाबले अभी भी ज्यादा है जिसकी वजह से घरेलू उद्योगों की प्रतिस्पर्धा पर असर पड़ता है।

